H.W
7/7/21

कर्ण का मित्र प्रेम

Ch - 3

(1)

Date
Page

प्रश्नोत्तर

(क) कर्ण किसका ऋणी था?

उ- कर्ण दुर्योधन का ऋणी था।

(ख) कृष्ण को कौन कथा बता रहा था?

उ- कृष्ण को कर्ण कथा बता रहा है।

(ग) तन, मन, धन कर्ण ने किसे समर्पित किया है?

उ- तन, मन, धन कर्ण ने दुर्योधन को समर्पित किया है।

(घ) कवि के अनुसार कौन-सा धर्म श्रेष्ठ है?

उ- कवि के अनुसार मित्र-धर्म श्रेष्ठ है।

Date
Page (2)

लिखित

1. भाव स्पष्ट कीजिए -

मित्रता बड़ा अनमोल रतन,
कब इसे तोल सकता है धन ?
धरती की तो है क्या बिसात ?
आ जाए अगर बैकुंठ हाथ,
उसको भी न्योछावर कर दूँ,
कुरुपति के चरणों पर धर दूँ।

उ- इस पद्यांश में कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने मित्र के प्रति अटल प्रेम को व्यक्त करते हुए कहा है कि 'मित्रता' एक ऐसा रत्न है जिसका मूल्य नहीं आँका जा सकता है। कर्ण ने मित्रता का महत्व देते हुए श्रीकृष्ण से कहा है कि ज़मीन की बात तो छोड़ दीजिए। यदि स्वर्गलोक भी मुझे मिल जाए तो उसे भी मैं दुर्योधन के चरणों में समर्पित कर दूँगा।

2. रिक्त स्थान भरिए-

है ऋणी कर्ण का शोभ-शोभ,
जानते सत्य यह सूर्य सोम।
तन, मन, धन दुर्योधन का है,
यह जीवन दुर्योधन का है।
सुरपुर से भी मुख मोड़ूँगा;
केशव, मैं उसे न छोड़ूँगा।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) 'धूलों में था मैं पड़ा हुआ' का क्या तात्पर्य है?

उ- इस पंक्ति का तात्पर्य है कि मैं मिट्टी में पड़ा हुआ था, मेरा कोई अस्तित्व नहीं था।

(ख) रोम-रोम ऋणी होने का क्या अभिप्राय है?

उ- रोम-रोम ऋणी होने का तात्पर्य है- शरीर का एक-एक रोम कर्जदार होना। अर्थात दुर्योधन का कर्ण के ऊपर इतना अहसान है कि उसके शरीर का एक-एक रोम उसके उपकार का कर्जदार है।

(ग) कर्ण ने किसे तक्षक समान कहा है और क्यों?

उ- कर्ण ने दुर्योधन को तक्षक के समान कहा है, क्योंकि दुर्योधन ने कर्ण पर अनगिनत उपकार इसी प्रकार किए हैं, जिस प्रकार एक वृक्ष सभी जीवों पर करता है।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक

(क) कर्ण अपने मित्र दुर्योधन की हर बात क्यों मानता है? क्या हर बात मानना ठीक है?

उ- कर्ण अपने मित्र दुर्योधन की हर बात मानता है क्योंकि वह अपने प्रति किए गए उपकार को नहीं भूलता। अपनी माँ कुंती

थामे जाने पर दुर्योधन ने ही उसको वेश-भूषा को तथा पालन-पोषण किया इसीलिए वह दुर्योधन की बातों को उससे मानने से भी इनकार नहीं करता था।

किसी की सभी बातों को मानना या न मानना इस पर निर्भर करता है कि उसका भलाई व परोपकार करने वालों से कैसा संबंध है। हमें उन बातों को मानना चाहिए जिससे किसी की भलाई हो परंतु ऐसी बातों को मानने इनकार कर देना चाहिए जिससे अनर्थ हो। एक बात अवश्य ध्यान रखनी चाहिए कि यदि कोई उपकार के बदले गलत कार्य करवाना चाहे तो ऐसा करने से मना कर देना चाहिए।

(ख) मित्रता की तुलना किसी से भी नहीं हो सकती। इस पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उ- मित्रता की तुलना किसी से नहीं की जा सकती क्योंकि एक सच्चा मित्र हमेशा बिना किसी स्वार्थ के सहयोग करता है। वह सुख में ही नहीं बल्कि दुःख के समय भी हमारे साथ रहता है तथा हमारी भावनाओं को

समझने की कोशिश करता है। कुछ लोग धन को मित्रता से अधिक महत्व देते हैं जबकि ऐसा करना गलत है। इस तरह हम कह सकते हैं कि सच्चे मित्र की तुलना किसी से भी करना संभव नहीं है।

(ग) दुर्योधन के लिए कर्ण ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था। यह कहाँ तक उचित था? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

उ- दुर्योधन के लिए कर्ण ने अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया, उसकी सार्थकता दो प्रकार से समझी जा सकती है-

1. कर्ण ने अपने प्रति किए गए उपकार के कारण ऐसा किया।

2. दुर्योधन ने ~~अपने~~ कर्ण को अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए प्रेरित किया। इन दोनों स्थितियों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कर्ण ने मित्र-धर्म पूरा किया, परंतु दुर्योधन ने कर्ण का गलत उपयोग किया।

Date
Page

भाषा - ज्ञान

1. निम्नलिखित रेखांकित पदों के आगे लिखिए कि वे विशेषण है या विशेष्य.

(क) ऋणी कर्ण - विशेष्य

(ख) सत्य वचन - विशेषण

(ग) विशाल धरती - विशेषण

(घ) अनमोल रतन - विशेष्य

(ङ) छायादार वृक्ष - विशेषण

2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए-

(क) स्नेह - प्यार, प्रीति

(ख) धन - संपत्ति, संपदा

(ग) तरु - पेड़, वृक्ष

(घ) धरती - धरा, पृथ्वी

3. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

(क) सुरपुर (स्वर्गलोक) - राम के वन गमन के बाद राजा दशरथ सुरपुर सिधार गए।

(ख) गुनना (सोचना - विचारना) - किसी भी कार्य को करने से पहले हमें उसके विषय में गुनना।

(ग) मुख मोड़ना (किसी की ओर ध्यान न देना) - अच्छे कार्यों से हमें मुख नहीं मोड़ना चाहिए।

(घ) न्योछावर करना (समर्पित करना) - देश की रक्षा के लिए हमें अपने प्राण न्योछावर कर देने चाहिए।

(ङ.) कुठार चलाना (किसी पर आघात करना) - सज्जन लोगों पर कुठार चलाना अनैतिक होता है।

4. निम्नलिखित वाक्य शुद्ध कीजिए-

(क) कर्ण को शेम-शेम ऋणी है।

उ- कर्ण का शेम-शेम ऋणी है।

(ख) कर्ण कृष्ण को कहा कि की मित्रता बड़ी अनमोल रतन है।

उ- कर्ण ने कृष्ण से कहा की मित्रता बड़ा अनमोल रतन है।

(ग) दुर्योधन ने कर्ण को सम्मान दो।

उ- दुर्योधन ने कर्ण को सम्मान दिया।

(घ) मेरा, तन, मन, धन दुर्योधन की है।

उ- मेरा, तन, मन, धन दुर्योधन का है।

(ङ.) धन मेरी लिए कुछ नहीं है।

उ- धन मेरे लिए कुछ नहीं है।